खिलाकर उनके गोबर से बीज एकत्र कर बुआई करने पर 65 से 70 प्रतिशत तक अंकुरण प्राप्त होता है जबकि अनुउपचारित बीज में 50 से 60 प्रतिशत तक अंकुरण क्षमता प्राप्त होता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम – अधिक अंकुरण प्राप्त करने के लिए बीज को रेत में 6 से 7 सेमी. की पतली परत बिछाकर बुआई करना चाहिए । यह परत रोपणी की क्यारी में भी बिछाई जा सकती है । अथवा जर्मिनेशन ट्रे का उपयोग करने पर भी रेत की परत बिछाकर बुआई करना उपयुक्त होता है ताकि बीज को अंकुरण हेतु आवश्यक हवा पानी एवं प्रकाश उपलब्ध हो सके।

बुआई का समय – मई माह उपयुक्त होता है।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि – इसके बीज सीधे रोपण स्थल में बोये जा सकते है या इन्हे सीधे पालीथीन की थैलियो से बोया जा सकता है। क्यारी में बीज 5 सेमी के अंतर पर लगाने चाहिए। बोने के एक सप्ताह बाद अंकुरण प्रारंभ हो जाता है।

रखरखाव/रोकथाम – प्रारंभ में पौधे अधिक कोमल होने के कारण उन्हें तेज धूप एवं गर्म हवा से बचाना आवश्यक होता है। पहले वर्ष में कम से कम दो बार निदाई एवं गुडाई करने से पौधें में अच्छी बढ़त होती है। पौधों की जड़ो को दीमक एवं अन्य बीमारियों से बचाने के लिए नीम की खली अथवा कीटनाशक दवा जैसे वॉविस्टीन आदि का 1 प्रतिशत सान्द्रता के धोल का छिड़काव करना चाहिए।

उपयोगिता – इसकी फलियॅा और पत्तियॉ मवेशियो के लिए चारे के रूप में उपयोग में लाई जाती है, तथा कॉटे युक्त शाखाऍं खेती में बागड़ बनानें में उपयोग मे ली जाती है। इसकी लकड़ी जलाने में, अनेक प्रकार के कृषि उपकरण बनाने में काम आती है। इसकी छाल से टेनिन एवं गोद प्राप्त होता है। यह कृषि वानिकी एवं मृदा स्थरीकरण के लिए अत्यन्त उपयोगी प्रजाति है। इसे खेत की मेड़ पर लगाया जा सकता है।

सम्पर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वैज्ञानिक

बीज शाखा

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

0761-2666529, 2665540

मूल्य रु. 10/-

बबूल

(अकेशिया निलोटिका)

बबूल वृक्ष

बीज

बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोली पाथर, जबलपुर (म. प्र.)

प्रजाति का नाम – बबूल

वानस्पतिक नाम – अकेशिया निलोटिका

प्रस्तावना – यह माइमूसी फैमली का वृक्ष है। यह एक मध्यम आकार सदाहरित छोटे तने एवं फैले हुए छत्र एवं पंख जैसी पत्तियों वाला वृक्ष होता है यह भारत के शुष्क स्थानों में बहुतायत से पाया जाता है। इसकी पत्तियॉ सामान्यतः अप्रैल में गिर जाती है नई पत्तियॉ मई माह में आने लगती है। इसकी पत्तियों एवं छाल में टेनिन विपुल मात्रा में होता है इसकी काटे दार शाखाऍं बाढ़ लगाने में काम आती है तने से गोंद निकलता है । इसकी पत्तियॉ एवं फल्लियॉ भेड़ बकरी के चारे के रूप में उपयोग में लाई जाती हैं । यह वृक्ष अनेक प्रकार की जमीन में उग सकता है मुख्यतः इसके लिए मिट्टी की निचली सतह में पर्याप्त मात्रा में स्थाई नमी आवश्यक होती है। उथली और चूने के पत्थर वाली जगह में इसकी वृद्धि अवरूध हो जाती है। यह पेड़ खेतों की मेड़ पर भी उगाया जा सकता है। यह वृक्ष 5 से 7 वर्ष की आयु में फल देना प्रारंभ कर देता है । जो कि प्रतिवर्ष प्राप्त होते है।

प्राप्ति स्थान – होशंगाबाद, ग्वालियर, धार, रीवा, पन्ना, जबलपुर आदि स्थानों पर बहुतायत से पाया जाता है।

मृदा का प्रकार – आम तोर पर काली दोमट/जलोढ़ कछारी दोमट मिटटी में अच्छी वृद्धि करता है।

बीज चक्र – प्रतिवर्ष बीज उत्पन्न करने की क्षमता रखता है।

पुष्पन का समय – इसके फूल पीले चमकीले एवं सुगंधित होते हैं जो कि जुलाई से सितम्बर के मध्य लगना आरंभ होते है।

फलन समय – फूल आने के बाद तुरंत फल आना शुरू हो जाते है जो कि मार्च से मई तक पक जाते है।

एकत्रीकरण समय – बीज एकत्रीकरण अप्रैल से मई माह में स्थानीय जंगलों एवं खेतों के आसपास से किया जा सकता है । बीज का एकत्रीकरण फली के पूर्ण रूप से पकने के पश्चात् ही करना चाहिए एवं एकत्रीकरण करते समय इस बात का खास ध्यान रखना चाहिए कि फली को पेड़ पर फटने अर्थात नीचे गिरने के एक सप्ताह पूर्व तोड़ लिया जाए एवं घूप में लकड़ी के हथौड़े से चटकाकर उससे बीज निकाला जाए। प्रत्येक परिपक्व फली में 8 से 12 बीज निकलते है।

प्रतिकिलो बीजो की संख्या – 1 किलो बीज में बीजों की संख्या 9000–10000 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि – सुरक्षित रूप से भण्डारण करने पर बीजों की अंकुरण क्षमता दो वर्ष से भी अधिक समय तक बनी रहती है।

अंकुरण प्रतिशत – बीज में 40 से 70 प्रतिशत तक अंकुरण पाया जाता है। बुआई के 1 सप्ताह पश्चात् अंकुरण प्रारंभ हो जाता है एवं 3 सप्ताह में पूर्ण हो जाता है। बीज सीधे पोलीथिन बेग एवं क्यारी में बोए जा सकते है परंतु पौध (बीजांकुर) को एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रतिरोपण करते समय काफी सावधानी की आवश्यकता होती हैं क्योंकि इसकी मुख्य जड़ (टेपरूट) काफी संवेदनशील होती है और प्रतिरोपण के समय मुख्य जड़ से स्पर्श होने पर पौधें के मृत होने की संभावना बढ़ जाती है। जिसके लिए प्रतिरोपण के समय पोलीथीन बेग अथवा क्यारी से पौध निकलते समय उस स्थान के आसपास की मिटटी को साथ में लेते हुए पौध निकालना चाहिए।

सामान्य भंडारण की स्थिति में –

प्रथम तीन माह में – 50 से 60 प्रतिशत

तीन से छः माह में – 45 से 50 प्रतिशत

छः से नौ माह में – 40 से 45 प्रतिशत

नौ से बारह माह में – 40 प्रतिशत एवं इससे कम हो जाती है। जबकि 2 वर्ष पुराने बीज में 25 प्रतिशत तक अंकुरण पाया जाता है।

पौध प्रतिशत – अंकुरण पश्चात 10 से 15 प्रतिशत तक मृत पौध के कारण कुल पोध 40 से 50 प्रतिशत तक ही प्राप्त होते है।

उपयुक्त भंडारण – वायुरोधी प्लास्टिक जार में सिलिका जैल रसायन के साथ मिश्रित कर 2 वर्ष पुराने बीज में 40 से 50 प्रतिशत तक अंकुरण प्राप्त होता है।

बुआई पूर्व उपचारण – बीज को बुआई पूर्व तेज गरम पानी में डालकर ठंडा होने के लिए रख देते है एवं 24 घंटे इसी पानी में भिगोकर रखने के पश्चात् बुआई करने से बीज में अंकुरण 70 से 75 प्रतिशत तक प्राप्त होता है। इसके अलावा बबूल के बीज की फल्लियों को मवेशी अथवा बकरी को